International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
Volume 3, Issue 9, September 2016 ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218) Impact Factoe-3.866
ASSOCIATED Asia Research Foundation
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

भारत की आजादी – आर्य समाज व भिवानी की भूमिका

डॉ. राजकुमार, एसोसिएट प्रोफेसर,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिवानी

भारतीय समाज की जड़ता को तोड़कर एकता और समानता की ओर प्रवृत करके आजादी में उल्लेखनीय योगदान देने में आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इसकी सरल–सीधी, माननवीय गरिमापूर्ण व सार रूप से शुद्ध वैदिक परम्परा पर आधारित शिक्षाएँ ठेठ ग्रामीण आदमी को आसानी से प्रभावित करती थी इसलिए ठेठ हरियाणवी इससे बहुत प्रभावित हुए, यहाँ शीघ्र ही आर्य समाज गरीब व किसान वर्ग में लोकप्रिय हो गया। यहाँ इसके द्वारा शिक्षा संगठन व जागृति का बीजारोपण किया गया जिससे यह स्वतन्त्रता आन्दोलन का आधार वाहक बना।

आर्य समाज आन्दोलन का प्रसार प्राय पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। यह आन्दोलन केवल रूप में ही पुनरूत्थान था न कि तात्विक रूप में स्मरणोय है कि स्वामी दयानन्द व उनके गुरू विरजानन्द दोनो ही शुद्ध वैदिक परम्परा में विश्वास रखते थे, उन्होने पुनः वेदो की ओर चलो का नारा लगाया। उत्तर वैदिक काल से आज तक सभी अन्य मत–मतान्तरों को उन्होने पाखण्ड अथवा झूठे धर्म की संज्ञा दी तथा वेदो के शुद्ध अर्थ तथा वैदिक धर्म के प्रति अगाद्ध श्रद्धा प्रकट की। स्वामी दयानन्द ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई। उनका मुख्य उद्देश्य झूठे धार्मिक तथा सामाजिक विश्वासों और कालान्तर में आई कुरीतियों को जड़ से उखाड़ कर देश को धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय रूप से एकीकृत करने को संकल्पित था। भारत के सामाजिक इतिहास में वह पहले सुधारक थे जिन्होने शुद्र तथा स्त्री को वेद पढ़ने तथा ऊँची शिक्षा प्राप्त करने व यज्ञोपवीत धारण करने तथा अन्य सभी , जातियों के स्त्रियों तथा पुरूषों की स्थिति सुधारने हेतु आन्दोलन किया।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सम्भवतः स्त्रियों की दशा सुधारने में सबसे अधिक कार्य किया, उनके अनुसार पुत्र तथा पुत्रियाँ समान है जिसका स्पष्ट प्रभाव हरियाणा में आर्य समाज के प्रमुख अनुयायी जाट समाज व विशेष रूप से उस समुदाय की स्त्रियों की स्थिति में सुधार के फलस्वरूप जाट जाति शीघ्र ही यहाँ की निर्णायक जातियों में स्थापित होना प्रमाणित करता है। उनके अनुसार वर्ण व्यवस्था अथवा पहचान जन्म नहीं कर्म से निर्धारित हो, ऐसा ही वैदिक काल में था, उनके अनुसार मनुष्य भाग्य के हाथों का खिलौना नहीं वास्तव में अपना भाग्य निर्माता है। उन्होने आवह्यान किया कि इस संसार की कर्म भूमि पर कर्म करते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होना ही जीवन का लक्ष्य है।

सम्भवतः भारत के ज्ञात इतिहास में हिन्दू धर्म तथा समाज में इतना मूलभूत दूरगामी व्यापक तथा प्रभावशाली सुधारक कोई नहीं हुआ। सम्भवतः अस्पृश्यता का त्याग तथा स्त्री–पुरूष समानता का अधिकार जो हमारे संविधान का अंग है, उन्ही के उपदेशों का परिणाम है ।

आर्य समाज की स्थापना 10 अप्रैल 1875 को हिन्दू समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करके एक स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु मुम्बई में हुई थी। इसके प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थ और उनका वेद–शास्त्रों का अध्ययन अद्वितीय था। वह एक महान देशभक्त थे, जो भारत की अविलम्ब स्वतन्त्रता में विश्वास रखते थे। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ–प्रकाश' में उन्होंने देशवासियों को सबसे पहले 'स्वराज्य' का नारा दिया था। उनका कहना था कि विदेशी राज्य कितना भी अच्छा क्यों न हो, वह स्वराज्य की बराबरी नहीं कर सकता।

पंजाब में यह आन्दोलन काफी लोकप्रिय हुआ। इसने पंजाब के हिन्दुओं को एक राष्ट्रीय पहचान दी। स्वामी जी ने 1877 में पंजाब का दौरा किया और लोगों की आस्था को देखकर उन्होंने 24 जून 1879 को लाहौर में आर्य समाज की शाखा की स्थापना की। हिसार में 1886 में आर्य समाज की स्थापना की गई। उन्होंने पंजाब के अन्य क्षेत्रों का भी दौरा किया और लोगों को सामाजिक बुराईयां दूर करने का आह्वान किया और सामाजिक समानता एवं नैतिक मूल्यों पर बल दिया। स्वामी दयानन्द ने अपनी यात्राओं के दौरान अपने उपदेशों में स्पष्ट कहा कि देश की सामाजिक–धार्मिक बुराईयां ही हिन्दूत्व को समस्त देश के सामने पिछड़ा बनाने में जिम्मेदार हैं। जब तक समाज इन बुराईयों से मुक्त नहीं हो पायेगा तब तक पिछड़ा ही रहेगा।

स्वामी दयानन्द ने पंजाब का ही नहीं अपितु देश के अन्य क्षेत्रों का भी भ्रमण किया और लोगों को यह समझाने का भरसक प्रयास किया कि अवतारवाद, श्राद्ध, मूर्तिपूजा, सामाजिक असमानता, बाल–विवाह, बहु–विवाह प्रथा, बहुदेववाद, पुनर्जन्म, पशुबलि, तन्त्र–मन्त्र–जन्त्र तथा झूठे कर्मकाण्ड, छुआछूत आदि में विश्वास न करें। वे लगातार इनकी आलोचना करते रहे। उस समय जब आर्य–समाजियों ने इन कुरीतियों को समाज से समाप्त करने का आह्वान किया तो इसे क्रान्तिकारी कदम माना गया। अंग्रेजों ने भी आर्य समाजी नेताओं की आलोचना की और इसे 'एक षड्यन्त्रकारी संगठन' भी करार दिया। क्योंकि आर्य समाज के कुछ नेता कांग्रेस की गतिविधियों में पूरी दिलचस्पी रखते थे जिसके कारण अंग्रेज इस संगठन के विरूद्ध थे। वेलेन्टाइन चिरोल ने ''आर्य समाज को सत्य ही भारतीय अशान्ति का जन्मदाता'' कहा है।

आर्य समाज ने वेदों को प्रमुख माना और वेदों को ओर लौटने का भारतीयों से आह्वान किया, वैदिक संस्कृति पर जोर व उस प्राचीन वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया जो जन्मना न होकर कर्म पर आधारित थी जिसमें अपनी रूची अनुसार व्यवसाय अपनाते हुए अपना स्थान (वर्ण) निश्चित करने की स्वतन्त्रता थी जिससे सामाजिक एकता व समरसता का प्रवाह होता था। इससे उनका उद्देश्य राष्ट्रीय गौरव की भावना पैदा करना था। वे भारतीय समाज में समानता के प्रबल समर्थक थे उन्होने स्त्री शिक्षा भी काफी जोर दिया और साथ–साथ शिक्षा का माध्यम मातृ–भाषा को ही उपयुक्त माना और हिन्दी – हिन्दू – हिन्दुस्तान का नारा देने वाला आर्य समाज प्रथम संगठन था। आर्य समाजी नेताओं द्वारा शुद्धि आन्दोलन चलाया गया और अनेक दयानन्द एंग्लों वैदिक (D.A.V) तथा गुरूकुलों शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से ज्ञान का प्रकाश फैलाया गया।

स्वामी दयानन्द ने हरियाणा के क्षेत्रों का दौरा किया और लोगों में राष्ट्रीय चेतना के भाव को जगाया। उनके दौरों और शास्त्रार्थो से हरियाणा में कई स्थानों पर संगठन की शाखाएँ स्थापित करना सम्भव हुआ और इससे क्षेत्रीय नेताओं का प्रादुर्भाव हुआ, जिनका राष्ट्रीय राजनीति में भी काफी योगदान रहा। विख्यात स्वतन्त्रता सेनानी पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने हरियाणा में आर्य समाज को मजबूत आधार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उन्होने हिसार में (भिवानी हिसार का ही एक भाग था) आर्य समाज की स्थापना की व स्वयं सचिव बने और प्रमुख समाजसेवी लाला चन्दुलाल को प्रधान बनाया। इनसे बहुत प्रभावित होकर राष्ट्रीय आन्दोलन में हरियाणा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वालों

में प्रमुख रूप से लाला मुरलीधर, लाला दुनीचंद, पं. नेकीराम शर्मा, डॉ. रामजीलाल, राव युधिष्ठिर, भक्त फूल सिंह, पीरूराम, मातूराम, बस्तीराम, भगत बुजाराम, नत्थुराम, चौ0. चन्द्रभान, पण्डित जर्नादन शर्मा, पं0 गंगादत्त सत्यार्थी, ठाकुर भगवन्त सिंह, किशोरी लाला, स्वामी कर्मानन्द, निहाल सिंह तक्षक, महाशय पण्डित मन्शाराम, महताब सिंह, चौधरी लाजपत, चौ0 गंगा सहाय, पण्डित समर सिंह व चौ0 मोहर सिंह वदिलसुख आदि थे। जिन्होंने इस संगठन के प्रचार–प्रसार में काफी सहयोग दिया। इन्होंने गांवों में जाकर अपने व्याख्यानों के द्वारा सामाजिक बुराईयों को दूर करने और राजनीतिक जागरण की भूमिका तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भिवानी में आर्य समाज की शाखा 1 सितम्बर 1897 में स्थापित हुई। आरम्भ में इसके सदस्यों की संख्या 36 थी। तोशाम में 1899 में तथा दादरी व बवानी खेड़ा में 1907 में आर्य समाज की शाखाएँ स्थापित हुई। आर्य समाज का भिवानी क्षेत्र के लोगों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। यहाँ 1899 में आर्य समाज द्वारा भिवानी में एक अनाथालय की स्थापना की गई। जिसमें लगभग 1000 बच्चों को हथकरघा उद्योग, दस्तकारी उद्योग की जानकारी दी जाती थी और साथ–साथ लिखना–पढ़ना भी सिखाया जाता था। इसने अतार्किक रीति–रिवाजों, अंधविश्वासों को कम करने तथा विधवा विवाह एवम् समानता पर बल दिया गया। गाय की रक्षा करना व हिंदी के विकास को भी आर्य समाजी काफी महत्वपूर्ण मानते थे। इसकी लोकप्रियता उस समय काफी बढ़ी जब इसके द्वारा शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना का कार्य तेजी से प्रारम्भ होने लगा। ऐंग्लों–वैदिक एंव गुरूकुल संस्थाओं ने शिक्षा के प्रचार–प्रसार में काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया। आर्य समाज के विधवा विवाह के नियम से प्रभावित होकर भिवानी के उग्रसेन जैन ने श्रीमति चन्द्रावली नामक विधवा से विवाह किया। यहाँ की गैर ब्राह्मण जातियों विशेषकर जाटों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा जिससे हरियाणा में राष्ट्रवाद एवं देशभक्ति की भावना को काफी बढ़ावा मिला। इस क्षेत्र में भी आर्य समाज आन्दोलन से नए विचार तीव्रता से फैले। संक्षेप में 1857 की क्रान्ति के बाद आर्य समाज पहली ऐसी संस्था थी जिसने यहाँ के लोगों में देश–भक्ति की भावना का प्रभावशाली ढंग से प्रसार किया। जिसके परिणाम स्वरूप भिवानी जैसे पिछड़े क्षेत्रों में सामाजिक एकता बढ़ी रूढिवादिता व जड़ता कम हुई नतीजतन राष्ट्रीय चेतना में उभार आया और यहाँ के लोगों ने राष्ट्रीय आन्दोलन की धारा को और प्रवाहमान किया जिसका प्रमाण तिलक स्वराज फन्ड में यहाँ के यागदान व भिवानी में 22 अक्टुबर 1920 व 15

फरवरी 1921 को महात्मा गाँधी असहयोग आन्दोलन में यहाँ की जनता के जोश की वजह से आए, जिसको यहाँ की सभाओं में विशाल जनभागेदारी, उससे भी महत्वपूर्ण महिलाओं की सहभागिता व तिलक स्वराज फन्ड में अपने गहने तक दान देने की प्ररेक घटनाओं से और भिवानी में राष्ट्रीय अदालत व स्कूल की स्थापना तथा इस घटना को विभिन्न समाचार पत्रों द्वारा '' लोकतन्त्र की पिछड़े ग्रामीण शहर में पहुँच '' के रूप में प्रकाशित करना भी आर्य समाज के माध्यम से भिवानी का भारत की आजादी में आधारभूत योगदान प्रमाणित करता ह।

सन्दर्भ :

- होम डिपार्टमेन्ट, पॉलिटिकल – ए प्रोसिडिंगस, दिसम्बर 1921 न0. 183–186
- पंजाब एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट, 1871–72
- भिवानी जिला गजेटियर, चण्डीगढ़ 1984
- इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, प्रोविन्शियल सिरीज, पंजाब, कलकत्ता, (1908)
- ए॰ आर॰ देशाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, (बाम्बे 1948)
- के॰ के॰ दत्ता रिनायसेंस, नेशनलिज्म एंड सोशल चेंजिज इन मोडर्न इंडिया (कलकत्ता 1965)
- के॰ डब्ल्यू॰ जोन्स, आर्य धर्म : हिन्दू कानसियसनस इन नाइनटिएन्थ सेन्चूरी पंजाब, (दिल्ली 1976)
- बी॰ एल॰ ग्रोवर यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, (दिल्ली 1981)
- एस॰ सी॰ मित्तल, फ्रीडम मूवमेन्ट इन पंजाब 1905–1929,
- रणजीत सिंह, हरियाणा के आर्य समाज का इतिहास, रोहतक
- वी॰पी॰ वटुक, स्टडीज इन इण्डियन फोल्क ट्रैडिसन, दिल्ली, (1979)
- ग्राम सेवक, सिरसा, 15 नवम्बर 1937
- पांडे धनपति, दी आर्य समाज एण्ड इण्डियन नैशनलिज्म,

- चमुपतिः पंजाब में आर्य समाज के 50 वर्ष (लाहौर 1928)
- डी.सी. हिसार (File No. 21 Main Head 2/5 SubHead Political 64A Subject Non-Corporation Movement 8 February 1921, H.S.A.)
- यंग इण्डिया, महात्मा गाँधी
- आचार्य मुरलीधर, भिवानी अतीत, खण्ड 2